नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

नशे के साम्राज्य की जड़ पर चोट जरूरी

नशा अब केवल सामाजिक बुराई या कानून-व्यवस्था की चुनौती भर नहीं रह गया है. यह देश की युवा पीढ़ी, अर्थव्यवस्था, सामाजिक ताने-बाने और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन चुका है. ऐसे में केंद्र सरकार का वर्ष 2029 तक देश को नशामुक्त बनाने का लक्ष्य और 2026 से 2029 के लिए तैयार किया गया तीन वर्षीय समयबद्ध रोडमैप महत्वपूर्ण है. लेकिन इस संकल्प की असली परीक्षा घोषणाओं में नहीं, जमीन पर होने वाली कार्रवाई में होगी. केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एनसीओआरडी की 10 वीं शीर्ष समिति की बैठक में नशामुक्त भारत अभियान का विजन दस्तावेज जारी किया था. इसमें चार प्रमुख स्तंभ, 25 घटक और 200 से अधिक एक्शन प्वाइंट शामिल हैं. खास बात यह है कि रणनीति में केवल नशीले पदार्थों की बरामदगी और छोटे तस्करों की गिरफ्तारी को सफलता का पैमाना बनाने के बजाय पूरे ड्रग नेटवर्क की आर्थिक और संगठित ताकत को निशाना बनाने पर जोर दिया गया है. यही इस लड़ाई की सबसे जरूरी दिशा है. ड्रग तस्करी का कारोबार तभी फलता-फूलता है, जब उसके पीछे पैसा, नेटवर्क और संरक्षण का तंत्र मौजूद हो. इसलिए तस्करों की संपत्तियां जब्त और फ्रीज करना, उनके वित्तीय ढांचे को ध्वस्त करना और विदेशों में बैठे शीर्ष भगोड़ों को भारत वापस लाना केवल कानूनी कार्रवाई नहीं, बल्कि ड्रग कारोबार की रीढ़ पर प्रहार है. 2029 तक विदेशों में सक्रिय 100 शीर्ष भगोड़ों को भारत लाने का लक्ष्य रखा गया है.

दरअसल, सिंथेटिक और रासायनिक ड्रग्स ने चुनौती को और जटिल बना दिया है. गुप्त प्रयोगशालाओं की पहचान, उनके खिलाफ कार्रवाई और प्रीकर्सर रसायनों की निर्माण प्रक्रिया से लेकर उपयोग तक 100 प्रतिशत डिजिटल ट्रैकिंग की योजना इसी बदलते खतरे को ध्यान में रखकर बनाई गई है. लेकिन डिजिटल निगरानी की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि संदिग्ध गतिविधियों की सूचना मिलने के बाद एजेंसियां कितनी तेजी से कार्रवाई करती हैं. तकनीक तभी उपयोगी है, जब वह कार्रवाई की गति बढ़ाए.

इस अभियान का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष नशे की मांग को कम करना है. तस्करी पर कितनी भी कार्रवाई क्यों न हो, यदि बाजार बना रहेगा तो नए तस्कर और नए नेटवर्क खड़े होते रहेंगे. स्कूल और कॉलेज परिसरों के आसपास 500 मीटर के क्षेत्र को सुरक्षित बनाने का प्रस्ताव इसलिए महत्वपूर्ण है. युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए जागरूकता के साथ नशामुक्ति और पुनर्वास की सुविधाओं का विस्तार भी जरूरी है. नशे के आदी व्यक्ति को केवल अपराधी मानकर समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता; उसे इलाज और पुनर्वास की भी जरूरत है. मार्च 2027 तक प्रत्येक राज्य में पूरी तरह सुसज्जित एंटी-नारकोटिक्स टास्क फोर्स बनाने और मामलों में 30 दिन के भीतर फॉरेंसिक रिपोर्ट उपलब्ध कराने का लक्ष्य भी समयबद्ध कार्रवाई की दिशा में महत्वपूर्ण है.

दरअसल, नशे के खिलाफ लड़ाई सरकार अकेले नहीं जीत सकती. 'होल ऑफ गवर्नमेंट' के साथ 'होल ऑफ सोसाइटी' की सोच को व्यवहार में उतारना होगा. एनसीसी, एनएसएस और माय भारत के माध्यम से एक लाख नशामुक्त मित्र तैयार करने की योजना युवाओं को इस अभियान का सक्रिय भागीदार बना सकती है. परिवार, स्कूल, कॉलेज, सामाजिक संगठन और स्थानीय समुदाय भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं. नशे के खिलाफ अब आधे-अधूरे प्रयास की गुंजाइश नहीं है. 2029 का लक्ष्य बड़ा है और समय सीमित. इसलिए सफलता का पैमाना जब्त की गई ड्रग्स की मात्रा या गिरफ्तारियों की संख्या नहीं, बल्कि टूटते तस्करी नेटवर्क, सूखता अवैध धन, सुरक्षित होते शैक्षणिक परिसर, घटती मांग और बेहतर पुनर्वास होना चाहिए.

मालवा- निमाड़ की डायरी

बदलते माहौल से समर्पित कार्यकर्ताओं में निराशा

संजय व्यास

कांग्रेस के उत्कर्ष काल में मंदसौर जिले की गरोठ विधानसभा में समय ऐसा भी था जब विपक्ष का नाम लेना भी मुश्किल था. तब कुछ चुनिंदा लोग ही थे, जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया. उन्होंने संघर्ष किया, विरोध झेला, दुख भारी रातें काटीं, लेकिन पार्टी का साथ नहीं छोड़ा. उसी त्याग और समर्पण की बदौलत आज भाजपा संगठन मजबूत खड़ा है, लेकिन विडंबना यह है कि वही नींव के पत्थर आज पहचान के मोहताज हो गए हैं. पार्टी या शासकीय कोई भी कार्यक्रम हो, ये त्यागी कार्यकर्ता उपेक्षित किए जाने से दु:खी हैं. न सम्मान दिखाई देता है न ही कार्यक्रमों में उनकी पहचान नजर आती है. सम्मान तो दूर, मीडिया कवरेज में भी इनके नामों को भेजने में पार्टी कर्ताधर्ता तवज्जो नहीं देते. आज के दौर में स्थिति उलटती नजर आ रही है. कुछ नए चेहरे, जो कभी अपने स्तर पर पार्टी के लिए एक छोटा सा योगदान भी नहीं दे पाए, वे सबसे आगे खड़े होकर सुर्खियों में जगह तलाशते हैं. ऐसे माहौल ने पुराने और समर्पित कार्यकर्ताओं के मन में निराशा भर दी है.

इधर भी नाराजगी

झाबुआ भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष और पूर्व नगर पालिका उपाध्यक्ष दौलत भावसार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिन पर आयोजित दीपोत्सव कार्यक्रम में निमंत्रण नही मिलने पर नाराजगी जताई है. चूंकि कार्यक्रम सरकारी था, लेकिन उनका गुस्सा स्थानीय संगठन ईकाई पर फूटा. उन्होंने आरोप लगाया कि संगठन के कुछ पदाधिकारियों के कहने पर निमंत्रण नहीं भेजा गया. जबकि पार्टी के उपर से निर्देश थे कि कार्यक्रम में पूर्व पदाधिकारियों को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया जाए. इस बात की शिकायत भावसार ने प्रदेश नेतृत्व और मुख्यमंत्री तक करने की बात कही है.

पार्षद ने घेरा : चुना महापौर, मिला प्रतिनिधि

विगत दिनों देवास में अपनी अनदेखी से नाराज कांग्रेस पार्षद पं. दीपेश कानूनगो ने महापौर गीता अग्रवाल के साथ भाजपा पर निशाना साधा है. वार्ड समस्या को लेकर रहवासियों के साथ मिलने पहुंचे कानूनगो को महापौर की जगह उनके प्रतिनिधि के तौर पर उनके पति दुर्गेश अग्रवाल को सामने देख कानूनगो का पारा चढ़ गया. इसको मुद्दा बना उन्होंने महापौर के साथ भाजपा को भी घेर लिया. उन्होंने इसे देवास की जनता के साथ धोखा बताते हुए टिप्पणी की कि लोगों ने विश्वास जताते गीता अग्रवाल के रूप में भाजपाई महापौर चुना था, मगर मिला महापौर प्रतिनिधि. दरअसल वार्ड पार्षद जब अपने वार्डवासियों को लेकर नगर निगम पहुंचे तो महापौर नगर निगम में नहीं मिली तब कानूनगो ने उन्हें दो बार फोन लगाया लेकिन उन्होंने फोन नहीं उठाया. इसके पश्चात कमिश्नर द्वारा उन्हें बुलाकर चर्चा की गई तथा उपायुक्त आरती खेडेकर द्वारा मांग पत्र लिया गया तथा आश्वासन दिया गया कि आपकी सभी मांगों पर सकारात्मक विचार किया जाएगा. दीपेश कानूनगो का आरोप था कि अभी लगभग 450 टेंडर लगे हुए है जिसमें से एक भी टेंडर उनके वार्ड क्र 9 का नहीं लगा है. उनका कहना है, मेरे वार्ड में कार्यों की फाइल लगवाई जाती है, पर महापौर प्रतिनिधि के इशारे पर आगे नहीं बढ़ पाती.

जल के लिए सहयोग | सामूहिक प्रयास का भारत का आह्वान

सी. आर. पाटिल

> जलवायु परिवर्तन के कारण जल चक्र अधिक अनिश्चित हो सकता है, लेकिन हमारा जवाब अनिश्चित नहीं होना चाहिए. हमारा प्रयास सामूहिक, वैज्ञानिक, समावेशी और निरंतर होना चाहिए. चाहे गाँव का तालाब हो, भूजल का स्रोत हो, नदी घाटी हो या बदलती हुई वैश्विक जलवायु- सबसे एक ही सीख मिलती है : जल हम सभी को जोड़ता है. जल के भविष्य को केवल सरकारें सुरक्षित नहीं कर सकतीं. न ही कोई एक संस्था या देश अकेले ऐसा कर सकता है. जल हमारा साझा संसाधन है. जल सुरक्षा हमारी साझा जिम्मेदारी है. हम सभी को मिलकर आने वाली पीढ़ियों के लिए पानी की एक-एक बूंद सुरक्षित करनी होगी और प्रधानमंत्री के विकसित भारत@ 2047 के संकल्प को साकार करने में अपना योगदान देना होगा.

जल हमें उन तरीकों से जोड़ता है, जिनमें बहुत कम अन्य संसाधन जोड़ पाते हैं. नदियाँ प्रशासनिक सीमाओं को नहीं पहचानतीं. भूजल के स्रोत कई समुदायों की जरूरतें पूरी कर सकते हैं. आज होने वाली बारिश कल पीने के पानी, सिंचाई, भूजल या नदी के प्रवाह का आधार बनती है. इससे एक सरल लेकिन महत्वपूर्ण सिद्धांत सामने आता है: जल एक साझा संसाधन है और आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे सुरक्षित रखना हमारी साझा जिम्मेदारी है. इसी भावना के साथ भारत 22 से 26 सितंबर 2026 तक नई दिल्ली में आयोजित होने वाले 9वें भारत अंतरराष्ट्रीय जल सप्ताह में वैश्विक जल समुदाय का स्वागत करेगा. इसका आयोजन जल शक्ति मंत्रालय कर रहा है. इस वर्ष की थीम है- 'जलवायु के प्रति लचीला जल प्रबंधन'. जलवायु परिवर्तन के कारण जल चक्र लगातार अनिश्चित होता जा रहा है. ऐसे समय में यह विषय विशेष रूप से प्रासंगिक है.

भारत अंतरराष्ट्रीय जल सप्ताह केवल एक सम्मेलन नहीं है. यह ऐसा मंच है, जहाँ सरकारें, विशेषज्ञ, उद्योग जगत, समुदाय और अंतरराष्ट्रीय साझेदार अपने अनुभव, तकनीक और विचार साझा कर सकते हैं तथा भविष्य के लिए साझेदारियाँ बना सकते हैं. इसका उद्देश्य जल क्षेत्र से जुड़े हालिया विभागीय शिखर सम्मेलन की भावना और उससे मिली सीख को भी आगे बढ़ाना है. इस सम्मेलन का विचार माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने रखा था. इसमें भारत के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने एक साथ आकर जल क्षेत्र की चुनौतियों पर चर्चा की, अपने अनुभव साझा किए और आगे की राह तय करने पर विचार-विमर्श किया.

भारत इस संवाद में बड़े स्तर पर जल और स्वच्छता से जुड़ी योजनाओं को लागू करने का व्यापक अनुभव लेकर आया है. प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जल जीवन मिशन के तहत ग्रामीण भारत में 15.9 करोड़ से अधिक घरों तक नल से पानी पहुँचाया गया है. वर्ष 2019 में ऐसे घरों की संख्या 3.23 करोड़ थी. जल जीवन मिशन 2.0 का मुख्य उद्देश्य जलापूर्ति के बुनियादी ढाँचे को भरोसेमंद सार्वजनिक सेवा व्यवस्था में बदलना है. यह पहल बुनियादी ढाँचा तैयार करने से आगे बढ़कर लगातार बेहतर जल सेवा उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव है. इसमें जनभागीदारी के माध्यम से ग्राम पंचायतों और गाँव की संस्थाओं को आकलन की प्रक्रिया के केंद्र में रखा गया है. नमामि गंगे कार्यक्रम के माध्यम से भारत ने गंगा और उसकी सहायक नदियों को पुनर्जीवित करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया है.

स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण से भी एक महत्वपूर्ण सीख मिलती है. ग्रामीण क्षेत्रों में 12 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण किया गया है. इससे केवल बुनियादी सुविधाओं का विस्तार ही नहीं हुआ, बल्कि हमारी माताओं और बहनों को सम्मान मिला है और लोगों के व्यवहार में बदलाव सुनिश्चित करने में भी मदद मिली है. इस मिशन के दूसरे चरण में ठोस और तरल कचरे के प्रबंधन पर भी ध्यान दिया गया है. इसके तहत घरों और सामुदायिक स्तर पर इस्तेमाल के बाद निकलने वाले पानी यानी ग्रे-वॉटर के प्रबंधन के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं. इन सभी योजनाओं में एक बात समान है- 'जनभागीदारी'. जलवायु के अनुकूल जल प्रबंधन तभी सफल हो सकता है, जब स्थानीय लोग इसे समझें, इसे अपनी जिम्मेदारी मानें और इसे लंबे समय तक बनाए रखें.

जल सुरक्षा के सभी सवालों के जवाब किसी एक देश के पास नहीं हैं. हर देश के पास कुछ ऐसा अनुभव है, जिससे दूसरे देश सीख सकते हैं, और हर देश दूसरों से कुछ सीख सकता है. इसलिए भारत अंतरराष्ट्रीय जल सप्ताह का उद्देश्य किसी पर समाधान थोपना नहीं, बल्कि साझेदारी को बढ़ावा देना है. तकनीक इस बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी. चुनौतियों के बढ़ते स्तर के साथ जल क्षेत्र में वित्तपोषण के तरीकों को भी बदलना होगा. सरकारी निवेश की भूमिका बुनियादी बनी रहेगी. 22 से 26 सितंबर तक भारत मंडपम भारत के जल क्षेत्र के अनुभवों और दुनियाभर के जल संबंधी ज्ञान का केंद्र बनेगा. हम बड़े स्तर पर परियोजनाओं को लागू करने से मिले अपने अनुभव साझा करने के लिए तैयार हैं. साथ ही, हम दूसरों के अनुभवों को सुनने और उनसे सीखने के लिए भी उतने ही तत्पर हैं.

(लेखक केंद्रीय जल शक्ति मंत्री हैं)

नेता ने खाया मेवा तो हो गया हंगामा!

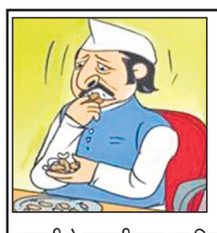

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की 'काबुलीवाला' कहानी मशहूर है जिसमें काबुलीवाला पठान कोलकाता में जज की बेटी मिनी को मेवा खिलाया करता था. इस पर बनी इसी नाम की फिल्म में बलराज साहनी ने काबुलीवाला का किरदार निभाया था

सांसद और वरिष्ठ अधिकारियों ने मेवा खाया तो हंगामा हो गया! उन्हें पता था कि विशेष समीक्षा बैठक में सूखे पर चर्चा करनी है तो काजू-बादाम जैसा सूखा मेवा खा लिया. चर्चा के लिए शरीर में एनर्जी भी तो चाहिए ! बादाम व अखरोट तो दिमागी कामकाज वाले लोगों के लिए बहुत उपयोगी हैं. बादाम के साथ अखरोट, किशमिश, खजूर, अंजीर, मुनक्का, जरदालू वगैरह भी रहने चाहिए थे. जब नेताओं से जनसेवा की उम्मीद की जाती है तो उनके मेवा खाने पर आपत्ति क्यों होनी चाहिए? गणेशोत्सव जारी है जिसके दौरान आरती होती है- हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा, लड्डुअन का भोग लगे संत करें सेवा ! गणपति बप्पा के प्रसाद में मेवा शामिल है. ऊंचे दर्जे की मिठाई में पिस्ता-बादाम चिपके रहते हैं. मेवा-लड्डू की भी इन दिनों अच्छी-खासी डिमांड है. काजू कतली की अपनी खासियत है. यदि नेता व अधिकारियों ने प्रसाद समझकर मेवा खाया तो उसमें गलत क्या है? ऐसा कोई कानून नहीं है कि सूखा स्थिति पर चर्चा करनी हो तो भूखे रहो! बारिश नहीं होने से मौसम ड्राई है तो ड्राई फ्रूट खा लिया. नेता खुद होकर मांग नहीं करता, मेवा की प्लेट अदब के साथ उसके सामने रख दी जाती है. यह सामान्य शिष्टाचार है जिसका तिरस्कार करना उचित नहीं है. कुछ चखना जरूरी हो जाता है. शायद विपक्ष मांग करेगा कि नांदेड़ के जिला नियोजन सभागार में हुई इस मेवा पार्टी प्रकरण की जांच की जाए ! उसमें मुद्दा यह भी उठेगा कि मेवा स्वदेशी था या विदेशी? वह अमेरिका से आया था या ईरान से? मीठे खजूर तो अरब देशों से ही आते हैं. अफगानिस्तान भी बड़ा मेवा सप्लायर रहा है.

निशानेबाज

भतीजे को साथ रखना नामंजूर, मायावती ने आनंद को किया दूर

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, बसपा सुप्रीमो मायावती ने अपने भतीजे प आकाश आनंद को पार्टी की सारी जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया. इस पर आपकी क्या राय है?'

हमने कहा, 'आनंद या हर्ष हमेशा मुक्त ही रहना चाहिए. मराठी में कहते हैं- आनंदी आनंद गडे, जिकडे-तिकडे चोहीकडे अर्थात आनंद सर्वत्र व्याप्त होना चाहिए, यहां-वहां और चारों ओर. जमीन से लेकर आकाश तक संपूर्ण वातावरण आनंदमय हो तो कहना ही क्या ! जिंदादिल व्यक्ति हमेशा आनंदित रहता है. फिल्मों में देव आनंद, चेतन आनंद और विजय आनंद रहे हैं. आपने आनंद मोहन, आनंद कुमार, आनंद प्रकाश, आनंद सिंह जैसे नाम सुने होंगे. आनंद को अंग्रेजी में ब्लिस या हैपीनेस कहते हैं. लोग आनंद पाने के लिए तरह-तरह की खटपट या उपक्रम करते हैं. सामान्य व्यक्ति सिनेमा, नाटक, टीवी देखकर आनंद महसूस करता है. लखनऊ के नवाब मुजरा या नृत्य देखकर आनंदित होते थे. साहित्यिक प्रवृत्ति के लोग कवि सम्मेलन या साहित्य गोष्ठी में आनंद अनुभव करते हैं. खिलाड़ी को खेल में आनंद आता है. कुछ संगीत के सुरों में डूबकर आनंद पाते हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हम मायावती के भतीजे आकाश आनंद की बात कर रहे हैं जिसे उन्होंने अपने से दूर कर दिया है.'

हमने कहा, 'पूर्व मुख्यमंत्री मायावती की पार्टी को 2024 के लोकसभा चुनाव में एक सीट तक नहीं मिली. अब उन्होंने खुद को आनंद से भी वंचित कर लिया. बगैर आनंद के जीवन किस काम का. ऐसा व्यक्ति गाने लगता है- तेरे बिना भी क्या जीना !'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, मायावती के भतीजे आकाश आनंद के साथ दलित वोटों का आधार है. उन्हें सपा या कांग्रेस अपने साथ ले सकती है. निषाद पार्टी के प्रमुख संजय निषाद ने भी आकाश आनंद को अपनी पार्टी में आने का ऑफर दिया है. आकाश आनंद चाहें तो महाराष्ट्र के रामदास आठवले के समान अपनी एक व्यक्ति की पार्टी बना सकते हैं.'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर CROSS WORD 12387

-डॉ सागर खादीवाला

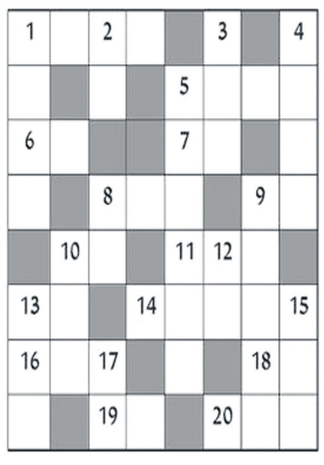

1. तजुर्बा, काम की जानकारी. देख-सुनकर प्राप्त ज्ञान (सं.) 2. भाप (सं.) 3. जो तोला या कूता न जा सके 4. विवश, लाचार 5. किसी जगह अधिक आदमियों के आने-जाने से उत्पन्न हुई सजीवता, रौनक 8. फौज, पलटन 9. समुद्राग्नि 10. सूत कातने का यंत्र 12. मशीन, पेंच, पुर्जा 13. सांटा, कोड़ा 15. झुकने की क्रिया या भाव 17. कामदेव की पत्नी

बाएं से दाएं
1. जो अवश्य हो, परमावश्यक (सं.) 5. चार भुजाओं वाला 6. देखने में विशाल और सुंदर 7. भूमि जोतने का उपकरण 8. एक बड़ा वृक्ष जिसमें लाल फूल आते हैं, जिनके डोडों में रुई होती है 9. बरगद 10. एक अन्न, चणक 11. पकड़ने की क्रिया, ग्रहण 13. सोलह का वर्गमूल 14. मल्ल 16. ज्वर 18. गीला, सीला 19. एक तरह का धान्य जिसे पेर कर तेल निकाला जाता है 20. भरण पोषण, आज्ञा के अनुसार कार्य करना

ऊपर से नीचे

Solution 12386

दे	व	क	न्या		अ	स्ति	त्व
व		म	य		नु		रि
र	सा		पा	र्श्व	सं	गी	त
थ		अ	लि		धा	त	
	स	म	का	ली	न		अ
दी	दा	र				सं	ध्या
	श	प	थ	प	त्र		प
शा	य	द		का	पा	लि	क

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में वाहन का सुख मिलेगा. व्यय पर नियंत्रण रखें. शिक्षा और प्रतियोगिता में यात्रा होगी. सफलता के योग है. सामाजिक ख्याति में वृद्धि होगी. वर्ष के अन्त में सिरर्द अनिद्रा जैसे रोगों से परेशानी हो सकती है. व्यर्थ के वाद विवाद एवं भागदौड़ से व्यस्तता रहेगी. विभागीय कार्यो की अधिकता रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ की भागदौड़ एवं व्यस्तता दिमागी उलझन रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वाहन का सुख मिलेगा. व्यय पर नियंत्रण रखें. कर्क राशि के व्यक्तियों को अच्छे प्रभाव की प्राप्ती होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यो में ख्याति प्राप्त होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यवसाय में विवाद का सामना करना होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को शिक्षा के क्षेत्र में सफ्लता प्राप्त होगी. स्वास्थ्य के प्रति सर्तकता बांछनीय. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को सिर दर्द, अनिद्रा जैसे रोग परेशान कर सकते हैं.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, हष्टपुष्ट, सुन्दर, निडर, एवं मिलनसार स्वाभाव का होगा. बचपन में थोड़ा ज्वर, अतिसार, निमोनिया, आदि की तकलीफ उठायेगा. उसके बाद स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

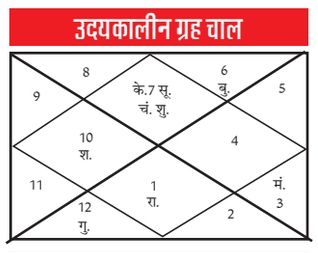

पंचांग

रा.मि. 31 संवत् 2083 भाद्रपद शुक्ल एकादशी भौमवासरे रात 7/58, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे प्रात: 6/45, अतिगण्ड योगे शाम 5/16, वणिज करणे सू.उ. 5/59, सू.अ. 6/1, चन्द्रचार मकर, पर्व- पद्मा एकादशी व्रत, शु.रा. 10,12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल एकादशी को उत्तराषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, के भाव में तेजी होगी. गुड़ खांड़, में घट बढ़ होगी. सोना, चांदी, के भाव में तेजी होगी. सरसों, तिल,तेल, तिलहन, में साधारण तेजी का योग है. भाग्यांक 2854 है.

मेष- जमीन जायजाद संबंधी कार्यो में सावधानी रखें. मित्रता से लाभ होगा. साहस, पराक्रम पुरूषार्थ बना रहेगा. नवीन योजना बनेगी.

वृषभ- विद्या के क्षेत्र में सफ्लता प्राप्त होगी, आर्थिक एवं व्यापारिक लाभ का योग है. पारिवारिक परेशानी दूर होगी. चिन्ता का निवारण होगा.

मिथुन- मन में प्रसन्नता रहेगी. विरोधी वर्ग उग्र रूप धारण कर सकता है. दूर दराज की यात्रा में सावधानी बांछनीय. नियमितता बनी रहेगी.

कर्क- घरेलू वातावरण आनन्दमय रहेगा. शुभ संदेश प्राप्त होगा. नवीन योजनाओंका विकास होगा. यश मान सम्मान प्राप्त होने का योग है. जल्दबाजी से बचें.

सिंह- शारीरिक कष्ट एवं व्यर्थ का विवाद हो सकता है. कामकाज में विलंब होगा. समय अनुकूल एवं लाभदायक रहेगा. शुभ संदेश मिलेगा.

कन्या- आध्यात्मिक एवं रचनात्मक कार्योंमें उत्साह रहेगा. मांगलिक कार्य बनने से प्रसन्नता होगी. मनोरंजन, उत्सव आदि के अवसर प्राप्त होंगे. खर्च होगा.

तुला- राजकीय एवं नौकरी से संबंधित कार्यो में व्यस्तता रहेगी. मित्रता उपयोगी रहेगी. जमीन जायजाद के कार्यो में सफ्लता मिलेगी. यश प्राप्त होगा.

वृश्चिक- आय के स्त्रोतों में वृद्धि होगी. किसी नवीन योजनाओं का क्रियान्वयन होगा. लापरवाही करने पर परेशानी का सामना करना होगा.

धनु- खर्च की अधिकता रहेगी. यात्रा का योग है. भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्ति होगी. शांति और सहयोग बना रहेगा. मित्र मिलन होगा.

मकर- मन में प्रसन्नता रहेगी. कहीं दूर दराज की यात्रा हो सकती है. सुख सम्मान और यश प्राप्त हो सकता है. आय के प्रबल योग हैं.

कुम्भ- कौटुम्बिक सुख एवं प्रसन्नता रहेगीं दूर की यात्रा हो सकती है. सुख सम्मान और यश प्राप्त हो सकता है. आय के प्रबल योग हैं.

मीन- आपके साहस पराक्रम एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी. नियोजित काम बनेगा. लाभदायक अवसरों की प्राप्ति होगी. साहस पराक्रम बढ़ेगा.

SUDOKU 7519

4	6		3		8	9		7
	1		9		6		5	4
						8		
	4		5				8	
2		5		4		6		1
	3				1		7	
		3						
5	9		7		2		6	
7		6	4		3		9	2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7518

5	7	2	3	8	4	1	9	6
8	6	1	9	2	5	7	3	4
3	9	4	1	6	7	5	8	2
2	5	7	4	1	3	8	6	9
4	8	6	5	9	2	3	7	1
1	3	9	6	7	8	4	2	5
6	2	3	7	4	1	9	5	8
9	4	5	8	3	6	2	1	7
7	1	8	2	5	9	6	4	3